ISSN 2350 – 1065 MUKTANCHAL
वर्ष : 13, अंक : 50, अप्रैल-जून 2026

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

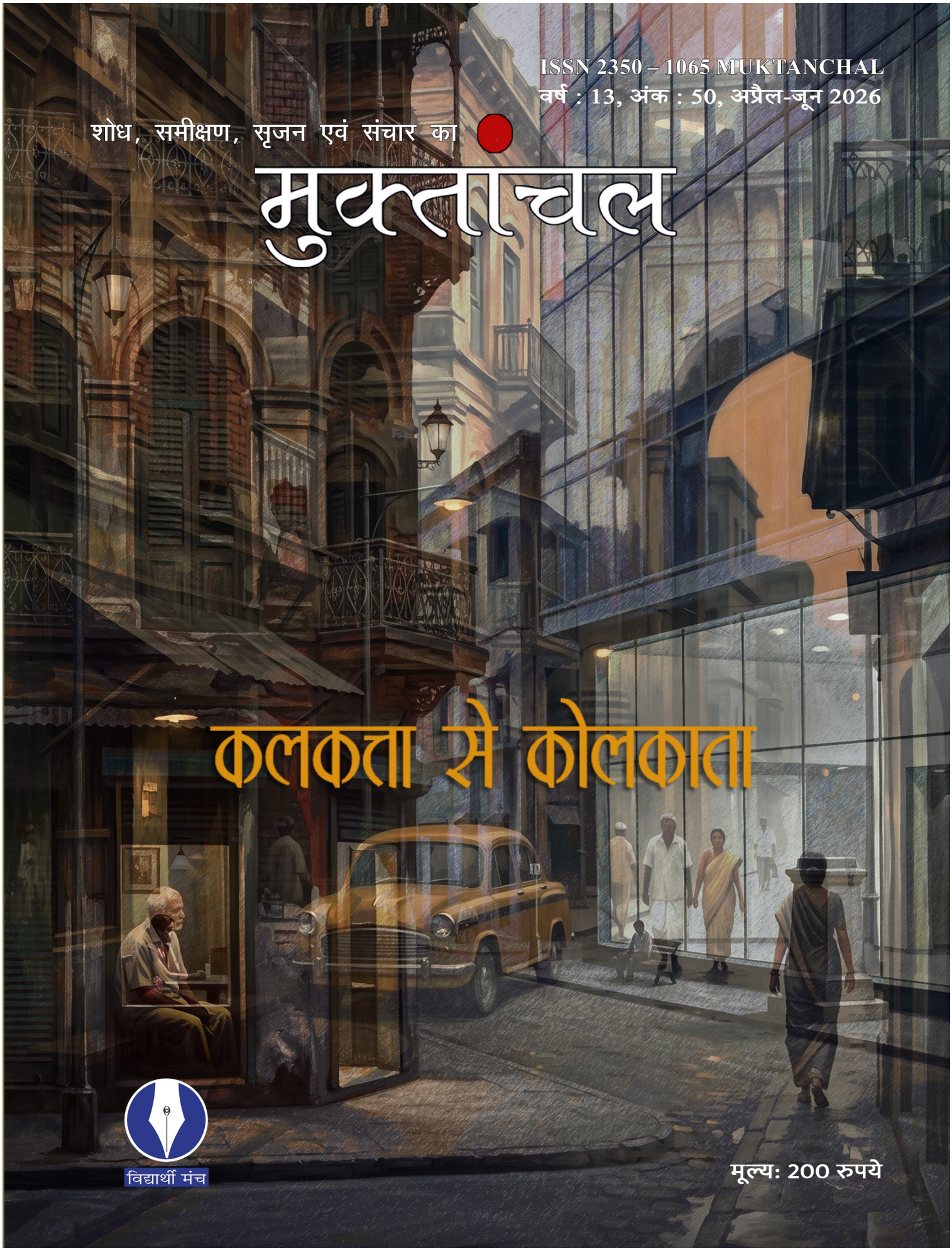

कलकत्ता से कोलकाता

विद्यार्थी मंच

मूल्य: 200 रुपये

उस पार से...

मानबहादुर सिंह
अक्तूबर 1938 – 24 जुलाई 1996

कलकत्ता में

कलकत्ता में
विक्टोरिया मेमोरियल के

साफ़-सुथरे मैदान की सड़कों पर
बिछे संगमरमर के गोल चिकने

महादेव का एक टुकड़ा उठा
मेरी पत्नी छिपा रही थी

मैंने देख तो लिया
न कुछ कहा न हँसा

मगर भीतर-भीतर लड़खड़ा गया था
कि इस महानगर की

अति आधुनिक इस जगह में
क्या वह पैरों तले

बिखरा हुआ ईश्वर बीन रही है
और डर भी रही है

कोई देख न ले
उसके विश्वास को?

बिखरना था, बिखर गए हमारे विश्वास
पर उन्हें सहेजना

झाड़-पोंछ उन्हें अपने एकांत में रखना
क्या गँवारपन भर है

जिससे डरा जाए
कि उन पर हँसा न जाए

अपनी पत्नी की डरी, लजाई
उन निष्पाप आँखों में

ठमक गया था
कि इस क़दर सहज, सरल और निष्पाप होना

क्यों गुनाह है?

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

पीयर रिव्यूड त्रैमासिक

ISSN 2350-1065 MUKTANCHAL

वर्ष: 13, अंक: 50, अप्रैल-जून 2026

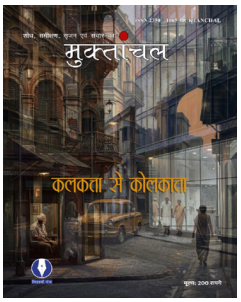

आवरण : उत्सव सिन्हा

संपादक : डॉ. मीरा सिन्हा
प्रकाशक : विद्यार्थी मंच
प्रबंध संपादक : सुशील कुमार पांडेय
कला संपादक : शुभागता श्रीवास्तव

परामर्श एवं विशेष सहयोग :

पंकज साहा : प्राक्तन अध्यक्ष, हिंदी विभाग, खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम बंगाल
मृत्युंजय श्रीवास्तव : संस्कृतिकर्मी एवं विचारक
आशुतोष सिंह : कवि एवं व्यंग्यकार
धनेश दत्त पांडेय : कथाकार एवं आलोचक
गीता दूबे : प्राध्यापक, स्कॉटिश चर्च कॉलेज, कोलकाता
चित्रा माली : प्राध्यापक, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, कोलकाता
निशांत : काजी नजरूल विश्वविद्यालय आसनसोल
प्रकाश कु. अग्रवाल : सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम बंगाल
विनय कुमार मिश्र : प्राध्यापक, बंगवासी कॉलेज, कोलकाता
विजया सिंह : रानी बिड़ला गर्ल्स कॉलेज, कोलकाता
उत्सव सिन्हा : वर्चुअल प्रोडक्शन स्पेसिअलिस्ट, मुंबई

व्यवस्थापन एवं प्रबंधन

विवेक लाल, विनीता लाल, सरिता खोवाला, परमजीत पंडित, नगीना लाल दास, रुद्रकांत झा एवं प्रीति सिंह

संपर्क एवं प्रसार :

विनोद यादव : 9007517546, पद्माकर व्यास : 9433196407
अशोक आशीष : 90461 93255
चांदनी सिन्हा (बर्मिंगम, यू०के०) : +447411412229

लेखकों से अनुरोध किया जाता है कि मुक्तांचल में प्रकाशन हेतु सामग्री यूनिकोड वर्ड (Unicode Word) या (Kurtidev 010) में भेजें।

पत्रिका में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं 'मुक्तांचल' से संबंधित सारे विवादों के लिए न्याय-क्षेत्र कलकत्ता उच्च न्यायालय होगा।

मुद्रक : **गाथा प्रकाशन,** 6/2/1, आशुतोष मुखर्जी लेन, हावड़ा - 711106

पीयर रिव्यूड टीम :

डॉ० धूपनाथ प्रसाद : प्राक्तन प्राध्यापक, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
डॉ० मंजु रानी सिंह : प्राक्तन प्राध्यापक, विश्वभारती, शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल
डॉ० अरुण होता : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, स्टेट यूनिवर्सिटी, बारासात, पश्चिम बंगाल
डॉ० मनीषा झा : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, उत्तर-बंग विश्वविद्यालय
डॉ० सत्या उपाध्याय : प्राचार्य, कलकत्ता गर्ल्स कॉलेज, कोलकाता
डॉ० अंजनी कुमार झा : प्राध्यापक, मीडिया स्टडीज, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार
डॉ० शुभ्रा उपाध्याय : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, खुदीराम बोस सेंट्रल कॉलेज, कोलकाता
डॉ० सुनील कुमार 'सुमन' : प्राध्यापक, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र.
डॉ. अमित राय : प्रभारी, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, कोलकाता

मुक्तांचल : A/C. 50200014076551, HDFC Bank BURRABAZAR, KOLKATA-700007. IFSC CODE-HDFC0000219

संपर्क:
डॉ० मीरा सिन्हा (संपादक) : 9831497320
सुशील कुमार पांडेय : 9681105070

ई-मेल muktanchalpatrika@gmail.com/ sinhameera48@gmail.com

पत्रिका का मूल्य : एक अंक 100 रुपये, विशेष अंक 200 रुपये
सदस्यता शुल्क : वार्षिक 1000 रुपये, आजीवन 5000 रुपये
संस्थाओं के लिए : वार्षिक 1000 रुपये, आजीवन 5000 रुपये
डाक खर्च (प्रत्येक अंक के लिए) अतिरिक्त 45 रुपये

शोध समीक्षण सृजन संचार

अवस्थिति

06 **संस्तुति**

आलेख

08 मृत्युंजय श्रीवास्तव — कलकत्ता : एक कोलाज श्रम, शिक्षा और सांस्कृतिक चेतना का शहर

12 अमित राय — कलकत्ता : नजदीक फासलों का शहर

18 मंजु रानी सिंह — एक पत्र कलकत्ता के नाम

22 विनोद साव — सिटी ऑफ़ जॉय

27 चित्रा माली — कलकत्ता की रूमानियत उसकी संस्कृति में है

अनुशीलन

32 सेराज ख़ान बातिश — कलकत्ता से कोलकाता हिंदी पक्ष की ग़ज़लें

40 जीतेंद्र जितांशु — क से कलकत्ता, को से कोलकाता और कलकत्ते की कविता

43 इतु सिंह — हिंदी रंगमंच की विकास यात्रा - कलकत्ता से कोलकाता तक

48 लिली साह — कोलकाता की हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता

53 कल्पना दीक्षित — कलकत्ता से कोलकाता और अलका सरावगी के दो उपन्यास

58 आदित्य विक्रम सिंह — बांग्ला माटी और बम्बइया सिनेमा

61 अनिता कुमारी यादव — सिद्धेश की कहानियों में सामाजिक और संवेदनात्मक बोध

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

66 प्रेमशंकर त्रिपाठी — स्वाभिमानी हिंदी साधक आचार्य ललिता प्रसाद सुकुल

69 इन्दु जोशी — हिमालय के स्वर्णिम शिखर : आचार्य कल्याणमल लोढ़ा

74 सत्या उपाध्याय — विष्णुकांत शास्त्री : जीवन-वृत्त, राजनीतिक व्यक्तित्व और राज्यपाल के रूप में परिचय

78 निशान्त — गोपाल प्रसाद, कांकिनारा और 'इरा'

83 दिव्या प्रसाद — कलकत्ता प्रवास और कृष्ण बिहारी मिश्र की सृजनात्मकता

88 कुसुम जैन — साहसी तेवर के धनी गीतेश जी : ब्रजदुलाल स्ट्रीट से चौरंगी तक

90 अमरनाथ — 'अपनी भाषा' की लोक-यात्रा

97 अस्मिता सिंह — कवि कुमारेंद्र पारसनाथ सिंह और कलकत्ता

शोध समीक्षण सृजन संचार

संवाद

101 शर्मिला जालान — शब्द से रेखा तक : प्रयाग शुक्ल की नई सृजन-यात्रा

109 सुशील कुमार पांडेय — स्मृतियों, संवेदनाओं और समय पर नरेश सक्सेना से संवाद

111 **जाह्नवी पांडेय** — विचार, संस्कृति और भारतीय अस्मिता पर डॉ. शंभुनाथ से संवाद

117 वसुंधरा मिश्र — वरिष्ठ पत्रकार विश्वंभर नेवर की नजरों में पत्रकारिता: एक स्ट्रांग कॉमनसेंस

121 जयश्री सिंह — मधु कांकरिया : साहित्य, समाज और स्त्री-मुक्ति की निर्भीक आवाज

संस्मरण

130 गीता दूबे — कपिल आर्य से गपशप

विविध

134 **सुरेश शॉ** — एक कलकतिया का कलकत्ता

136 मंजु श्रीवास्तव — मैं जब कोलकाता आई

140 शैलेन्द्र शांत — कलकत्ता की साहित्यिक डायरी

142 शैलेन्द्र शांत — निर्भय मल्लिक : एक सजग साहित्य-पुरुष की स्मृति नवल जी के फेसबुक वाल से

गतिविधियाँ

144 मधु सिंह — कोलकाता में हिंदी मेला

147 योगेश तिवारी — नीलांबर की यात्रा

150 मीनाक्षी सांगानेरिया — सदीनामा : अखबार में पत्रिका

अभिमत

151 प्रीति सिंह — मुक्तांचल-49 : साहित्य की विविध विधाओं को समृद्ध करता अंक

155 **परिशिष्ट**

पुस्तकें प्राप्त हुईं
अगला अंक
गाथा प्रकाशन

कलकत्ता से कोलकाता याकि अभिव्यंजना से मुक्तांचल तक का समय पूरे पचास वर्षों की उम्र लिए खड़ा है। अभिव्यंजना -1 का प्रकाशन 1976 के अप्रैल में हुआ था, इसका कलेवर और तेवर लघु पत्रिका का था जो उस समय की जरूरत थी। उस समय आपातकाल के शिकंजे में कैद बुद्धिजीवी एवं मसिजीवी अभिव्यक्ति की आजादी के लिए एकजुट हो रहे थे। अभिव्यंजना 1 के संपादकीय से उद्धृत अंश "आज जब अभिव्यक्ति का संकट गहरा होता जा रहा है, लेखकीय दायित्व एक चुनौती बन गया है, आज पहला कदम होगा कि शिविरों, लेबलों और झंडियों को दरकिनार कर एकजुट होने का। इस चुनौती के अवसर पर अभिव्यंजना जुझारु जनता और संघर्षशील जन लेखकों का स्वागत करती है। छिहत्तर और सतहत्तर के एक वर्ष में अभिव्यंजना के चार अंक निकले और हावड़ा में 23, 24 व 25 जनवरी 1977 को तीन दिवसीय भारतीय जनसाहित्य सम्मेलन का आयोजन इसी मंच से किया गया, जिसमें पूरे भारत से पचहत्तर (75) लेखक एक जुट हुए। इस सम्मेलन में मीसा, प्रेस सेंसरशिप जैसे काले कानून के खिलाफ प्रस्ताव लिए गए। अठहत्तर में परिस्थितियाँ बदली और मुक्तांचल का एक अंक प्रकाशित हुआ, जो अभिव्यंजना की ही अगली कड़ी थी, 'अभिव्यंजना' नाम के पंजीकरण का प्रयत्न विफल होने पर 'मुक्तांचल' की शुरुआत की गई थी जो 1978 के एक अंक के पश्चात रुक कर रह गई। बंगाल में वाममोर्चा की सरकार बनी और कलकत्ता का साहित्य जगत एक नए युग से मुखातिब हुआ। कलकत्ता के लिए हिंदी या हिंदी भाषी कभी अजनबी नहीं रहे, यहाँ। हिंदी माध्यम के ढेर सारे शिक्षण-संस्थान, पुस्तकालय, प्रेस और पत्र-पत्रिकाओं की भरमार रही, महानगरीय जीवन में विभिन्न प्रदेशों एवं भाषाओं के लोग सहज ही संपर्क भाषा के रूप में हिंदी को ही चुनते रहे हैं। इस तरह, कलकत्ता में हिंदी की अपनी जमीन अपनी आबोहवा हमेशा से तरोताजा रही है।

याद है मुझे 20वीं सदी का आठवाँ दशक, जब कलकत्ता उथल-पुथल से भरा था। दरअसल आजादी के बाद का पच्चीस वर्ष बेशुमार प्रतिक्रियाओं से लरज रहा था, साहित्य माध्यम था जिसमें उबलते हुए विचार जगह बना रहे थे। हिंदी भाषा के पठन-पाठन, अध्ययन-अध्यापन और लेखन सृजन से जुड़े लोग भी विद्रोही चेतना से भरे थे। वामपंथी विचारों के समाजवादी सोच वाले दलों के बीच जबर्दस्त 'पॉलीमिक्स' चल रही थी। विभिन्न घटक दल अपनी-अपनी नीति और समाज परिवर्तन की रणनीति को लेकर वैचारिक बहसों में व्यस्त थे। लघुपत्रिका वैचारिक लेखों से अँटी होतीं थीं। हर शनिवार की शाम कलकत्ता के सेंट्रल एवेन्यू का इण्डियन कॉफी हाउस लेखकों के गहमागहमी से आबाद रहता, तो रविवार को कलकत्ता के कॉलेज स्ट्रीट का कॉफी हाउस बहस मुबाहसे का केंद्र हुआ करता था। लेखक कॉफी हाउस के बाहर सड़क के किनारे खड़े होकर भी घंटों बातचीत में मशगूल दिखते थे। वह एक ऐसा समय था जब लेखक के साथ विचार चलता रहता था जिसका अपना एक रंग-रूप होता था, उसकी पहचान होती थी। उन दिनों सर्जनात्मकता बहुत थी क्योंकि कामयाब होने की बेचैनी हर सृजनकार में भरी हुई थी। उस कामयाबी का सबब व्यक्ति का नहीं था अपितु पूरे समाज को बदलने का स्वप्न था जो साकार होने के लिए मचल रहा था, उबल रहा था। उन्हीं दिनों 'अभिव्यंजना' लघु पत्रिका के चार अंक और 'मुक्तांचल' के एक अंक का प्रकाशन हुआ।

सतहत्तर के आमचुनाव के बाद पूरे देश में आजादी के तीन दशक के बाद बदलाव की एक तेज लहर आई। बंगाल विधानसभा में वाममोर्चा की सरकार बनी। कला और संस्कृति में जनवादी सोच सक्रिय हुई। कलकत्ता का हिंदी साहित्य और शिक्षा का संसार भी जनवादी विचारधारा से आप्लावित हो उठा। इस प्लावन में उफान नहीं ठहराव था, नई जमीन बनी, नई उम्मीद जगी। बीसवीं सदी के अंतिम दशक में कलकत्ता का साहित्यिक परिवेश शिविरबद्ध होता चला गया। हिंदी से जुड़कर रोजी-रोटी की उम्मीदें तेजी से फलीभूत होने लगीं। बांग्ला भाषियों ने भी इसे मनिहार की तरह धारण किया